अज़ीज़न

बात लखनऊ शहर की है। एक दिन कुछ सहेलियां गोमती नदी के किनारे गईं। उस समय नदी उफ़न रही थी। लड़कियों ने देखा कि एक बच्चा नदी में डूब रहा था। एक बालिका से यह देखा नहीं गया। उसने झट नदी में छलांग लगा दी। उसने बच्चे को पीठ पर रखकर बाहर निकाल लिया। जान की बाज़ी लगाने वाली यह बालिका अज़ीज़न थी। आगे चलकर अजीजन ने अंग्रेज़ों के दांत खट्टे कर दिए थे।

अज़ीज़न का जन्म एक गायक परिवार हुसैन ख़ां के यहां हुआ था। माता हगीदा बेगम अज़ीज़न को जन्म देकर इस संसार से विदा हो गईं। पिता हुसैन ख़ां ने अज़ीज़न को पाला। अज़ीज़न पिता से गाना सीखती। साथ में वह नाच का भी अभ्यास करती थी। अपने पिता के साथ वह महफ़िलों में जाने लगी। उसकी शौहरत लखनऊ से बाहर भी फैलने लगी। पिता की मौत के बाद वह कानपुर चली आई। नाच गाने में उसे काफ़ी रुपये मिल जाते थे, पर अज़ीज़न को यह काम पसंद नहीं था।

अज़ीज़न के एक दोस्त रामरतन थे। रामरतन बड़े देशभक्त थे। रामरतन ने अज़ीज़न को नाच-गाने का काम छोड़ने की राय दी। रामरतन के कहने पर अज़ीज़न ने यह काम छोड़ दिया। वह अपना ध्यान पढ़ने-लिखने में लगाने लगी। वह रामरतन से अंग्रेज़ों के ज़ुल्म के बारे में सुनती थी। यह सब सुनकर अज़ीज़न का खून खौल उठता। वह अंग्रेज़ों को उनके ज़ुल्म का सबक सिखाना चाहती थी। वह आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़ी।

उन दिनों वीर तांत्या टोपे देश के कोने-कोने में घूमकर आज़ादी का अलख लगा रहे थे। जब वे कानपुर आए तो उनकी मुलाक़ात अज़ीज़न से हुई। अज़ीज़न के देशप्रेम का हौसला देखकर तांत्या टोपे बहुत प्रसन्न हुए। अज़ीज़न उसके बाद तांत्या टोपे के शिविर में रहने लगी। उसने घुड़सवारी और तलवार चलाने की कला सीख ली। उसकी चतुराई देखकर तांत्याजी ने उसे जासूस बना लिया। वह अंग्रेज़ों की योजना का पता लगाती और सारी खबरें तांत्याजी को देती थी।

देश की आज़ादी की लड़ाई में अज़ीज़न ने अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे। उन पर जासूसी करने का मुकदमा चलाकर अंग्रेजों ने फांसी की सजा दी। अज़ीज़न बाई जैसी साहसी और वीर महिलाओं के बल पर ही हमें आज़ादी मिली है। उन्हें हमारा सलाम।

एक सच्ची देशभक्त

एक बार की बात है। तांत्याजी और अज़ीज़न ने अपने सैनिकों को अंग्रेज़ों की छावनी पर हमले का आदेश दे दिया। अचानक हमले से अंग्रेज़ी फ़ौज के बीच तहलका मच गया। अंग्रेज़ी फ़ौज में हिंदुस्तानी सिपाही अंग्रेज़ सिपाहियों को मारने लगे। अनेक सिपाही मौत के घाट उतार दिए गए। जगह-जगह छावनी में आग लगा दी गई। उस समय अंग्रेज़ों के सेनापति ने 2500 सैनिकों को कानपुर के किले में भेज दिया। करीब एक हजार अंग्रेज़ महिलाओं और बच्चों को किले में भेज दिया गया।

इधर तांत्याजी ने कानपुर के किले पर हमला करने की ज़िम्मेदारी अज़ीज़न का दे दी। नाना

साहेब को भी फौज के साथ भेजा गया। तांत्याजी ने खुद क़िले के बाहर सैनिकों के साथ मोर्चा संभाल लिया। अज़ीज़न ने पुरुष लिबास में सैनिकों के साथ किले पर धावा बोल दिया। यह लड़ाई 21 दिनों तक चलती रही। इस बीच किले में रह रहे अंग्रेज़ों को रसद की कमी पड़ गई। अंग्रेज़ों ने घबराकर इलाहाबाद सूचना भेजनी चाही। पर अज़ीज़न को यह सूचना मिल गई।

दूसरे दिन कानपुर के किले पर तीन तरफ़ से हमला किया गया। अचानक हमले से अंग्रेज़ शांत पड़ गए। उन्होंने सुलह करने की पेशकश की और अपने सारे हथियार तांत्याजी के सैनिकों को सौंप दिये। तभी जाकर किले में बंद अंग्रेज़ों को इलाहाबाद जाने के लिए छोड़ा गया। इलाहाबाद पहुंचकर अंग्रेज़ों ने सेनापति को अपनी कहानी सुनाई। अंग्रेज़ सेनापति बहुत क्रोधित हुआ। उसने भारतीयों से बदला लेने का निश्चय कर लिया। एक बड़ी सेना को कर्नल डुगाई के साथ तुरंत कानपुर भेजा गया। अंग्रेज़ सैनिकों ने कानपुर को चारों ओर से घेर लिया और शहर में घुसते ही मारकाट शुरू कर दी।

अंग्रेज़ सैनिकों का मुकाबला करने के लिए तांत्या टोपे आगे बढ़े। दोनों ओर से हमले का दौर चल रहा था। तभी अंग्रेज़ सैनिक अधिकारी फेड्रिक कूपर एक बड़ी फौज के साथ आ धमका। डुगाई और फेड्रिक ने तांत्या टोपे को घेर लिया। उधर अज़ीज़न भी सैनिकों के साथ जूझ रही थी। उसने देखा तांत्या टोपे अकेले पड़ गए हैं। अज़ीज़न तांत्याजी के पास पहुंची। उसने तांत्याजी को तत्काल वहां से भाग जाने को कहा। पर तांत्याजी नहीं माने। वे लड़ते रहे। तब अज़ीज़न छावनी में पहुंची और तांत्याजी की तरह वेशभूषा धारण की। वह तुरंत युद्ध के मैदान में आ डटी। मौका देखकर तांत्याजी भागे। उधर नाना साहेब युद्ध के मैदान में पहुंच गए। अज़ीज़न और नाना साहेब अंग्रेज़ों से मुकाबला कर रहे थे। तभी तांत्याजी फिर सैनिकों के साथ आ धमके। तीनों ओर से हमले के कारण अंग्रेज़ों के छक्के छूट गए। अंग्रेज़ सेनापति ने घबराकर नाना साहेब के सामने घुटने टेक दिए। तांत्याजी ने सभी अंग्रेज़ सैनिकों को कैद कर लिया। उन्होंने अज़ीज़न की पीठ ठोंकते हुए कहा—"आज तुमने हमारी लाज बचा ली। अगर आज तुम न होती तो हमारी हार निश्चित थी। तुम हमारे बीच शेरनी हो।" अज़ीज़न, तांत्याजी और नानाजी के कारण अंग्रेज़ों के पांव कानपुर में नहीं टिक सके।

एक साहसी महिला नपु

अज़ीज़न बड़ी साहसी महिला थी। वह रात में अंग्रेज़ों की छावनी में जाती। वहां अपने नाच गाने से सबको मोहित कर देती थी। एक दिन जब वह छावनी में गई तो उसे अंग्रेज़ सैनिकों ने कैद कर लिया। उस पर जासूसी करने का मुकदमा चला। उसे फांसी की सजा सुनाई गई।

6 मई, 1857 को अज़ीज़न को फांसी के तख्ते पर लाया गया। उसने प्रसन्न भाव से धरती मां को प्रणाम किया और फांसी का फंदा अपने गले में डाल लिया। ऐसी ही वीरांगनाओं और वीरों के बल पर आगे चलकर भारत को आज़ादी मिली। इस आज़ादी की रक्षा के लिए आज भी ऐसे ही त्याग की ज़रूरत है। □

'सुबह' से साभार